नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 28.09.2021

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित प्रार्थना सभा के अंतर्गत **डॉ. जगदीश चन्द्र बोस** की पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रभारी **डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव** ने उद्‌बोधन देते हुए कहा कि जगदीश चन्द्र बोस का जन्म 30 नवंबर, 1858 को हुआ था। वे भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे, जिन्हें भौतिकी, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा पुरातत्व का गहरा ज्ञान था, इन्होंने रेडियो और सूक्ष्म तरंगों की प्रकाशिकी पर कार्य किया। इन्हें रेडियो विज्ञान का पिता माना जाता है। ये भारत के पहले वैज्ञानिक थे, जिन्होंने सर्वप्रथम अमेरिकन पेटेंट प्राप्त किया। उन्होंने एक यंत्र क्रेस्कोग्राफ का आविष्कार किया, जिसके माध्यम से विभिन्न उत्तेजकों के प्रति पौधों की प्रतिक्रिया का अध्ययन किया। इस प्रकार इन्होंने सिद्ध किया कि वनस्पतियों में जीवन है और इनमें भी जैविक क्रियाएं होती हैं इसके साथ ही पौधों में जीवन, दर्द एवं खुशी की संवेदना और वाह्य कारकों जैसे प्रकाश, रसायन, स्पर्श, गुरुत्वाकर्षण आदि के प्रभाव को लाजवंती, शालपर्णी एवं सूर्यमुखी पर प्रयोग द्वारा स्थापित किया। पादप क्रिया विज्ञान में इनका योगदान प्रकाश संश्लेषण कोशा द्रव्य के आरोहण तथा तंत्रिका एवं मोटर क्रियात्मकता आदि के क्षेत्र में अविस्मरणीय है। कार्यक्रम में उपस्थित सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

वार्षिक महोत्सव के अंतर्गत अंग्रेजी विभाग द्वारा विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति कौशल के विकास एवं उच्चारण में शुद्धता लाने के साथ–साथ भावात्मक स्पष्टीकरण की क्षमता बढ़ाने एवं व्यवहारिक कुशलता लाने के उद्देश्य से **'न्यू एजुकेशन पॉलिसी रिफ्लेक्टेड**

इन न्यू इंडिया' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में कुल 54 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

निर्णायक मंडल के रूप में वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रभारी **डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव,** वाणिज्य विभाग के प्रभारी **श्री नंदन शर्मा** तथा गृहविज्ञान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर **डॉ. नेहा कौशिक** ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर **सुश्री कादम्बरी** (बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष), द्वितीय स्थान पर **सुश्री सुहानी सिंह** (बी. एस–सी. द्वितीय वर्ष), तृतीय स्थान पर **सुश्री खुशबू चौहान** (बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष) रही एवं सांत्वना पुरस्कार **सुश्री कृति मिश्रा** (बी.ए. प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ अभय श्रीवास्तव ने छात्रों को सहज रूप से श्रोताओं से जुड़ने की सलाह दी क्योंकि श्रोता वक्ता के विचारों को तभी ग्रहण करता है जब वह उससे प्रभावित होता है और उसे ग्रहण करने में सहजता प्रतीत होती है। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ नेहा कौशिक ने कहा कि भाषण देने से वाक्पटुता के कौशल का विकास होता है और हम अपने शब्द भंडार में अभिवृद्धि कर सकते हैं इसी क्रम में श्री नंदन शर्मा ने कहा कि विरूव में ऐसे विख्यात वक्ता भी हुए हैं जो अपने प्रारम्भिक दिनों में वाक् कौशल से विरत रहे हैं जबकि कालांतर में सकारात्मक प्रयास से विश्व में ख्याति प्राप्त की। प्रतियोगिता का संयोजन अंग्रेजी विभाग प्रभारी श्रीमती कविता मंध्यान ने किया, उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि भाषण के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक है क्योंकि सामान्य बातचीत में जो लोग क्रमबद्ध रूप से ठीक प्रकार से बातचीत कर लेते हैं वे भी भाषण के समय घबराहट में उन बातों को भूल जाते हैं इससे बचने का सीधा तरीका है कि की क्रमबद्ध तथा सांकेतिक रूप से उन्हें लिखकर स्मरण किया जाय तथा उसे प्रस्तुत करने से पहले अभ्यास

आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में निर्णायक मंडल का आभार ज्ञापन **श्रीमती कविता मंध्यान** ने किया।

इसी क्रम में संस्कृत भाषण प्रतियोगिता के अन्तर्गत **भारतीय जीवन मूल्य** विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 15 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान बी.काम. प्रथम वर्ष के **श्री सुधीर पाण्डेय,** द्वितीय स्थान बी.ए. तृतीय वर्ष के **श्री दुर्गेश पाल** एवं तृतीय स्थान बी.ए. प्रथम के **श्री तारकेश्वर पाण्डेय** ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन हिन्दी विभाग की सहायक आचार्य **डॉ. सुधा शुक्ला** ने किया निर्णायक मण्डल में **डॉ. एस.एन. शुक्ला** एवं **डॉ. अमित त्रिपाठी** ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

ASingh

डॉ. अभिषेक सिंह
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी